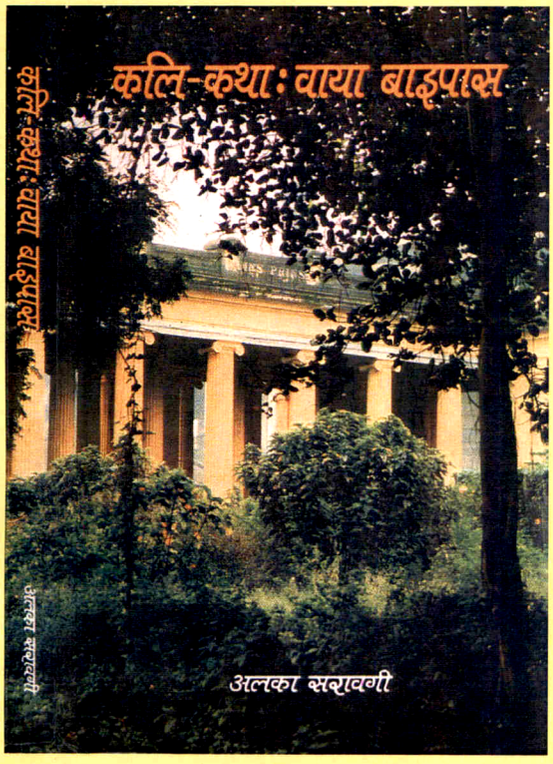


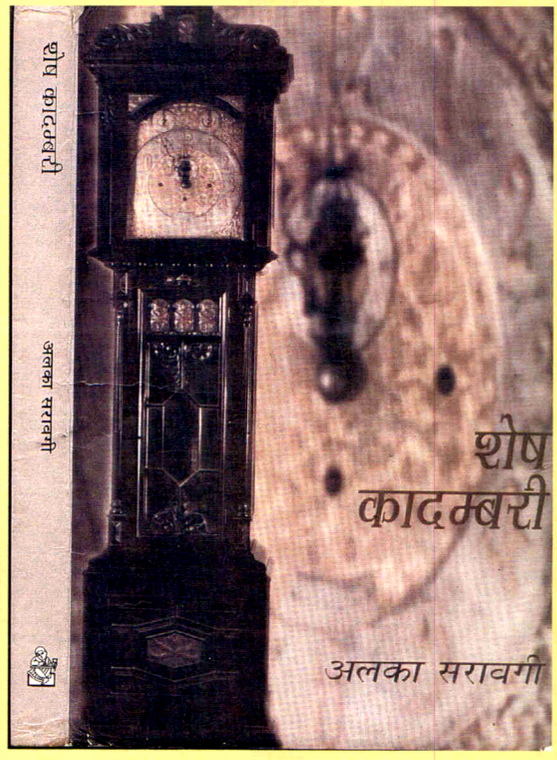


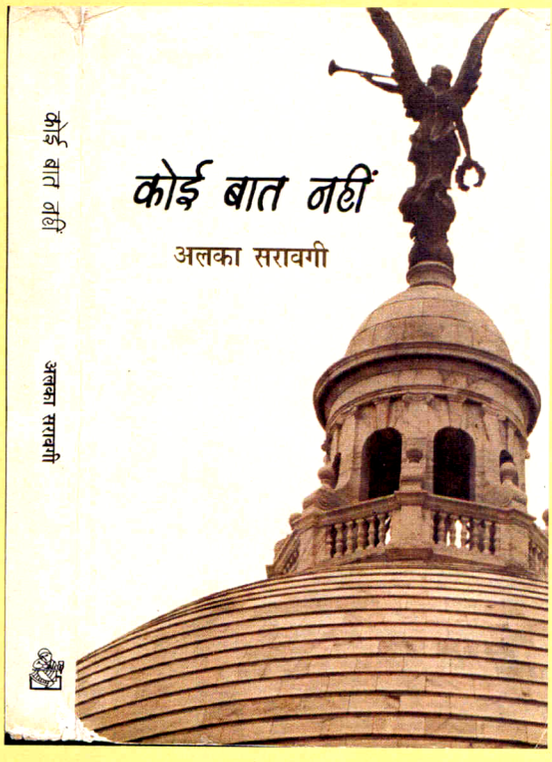

उपन्यासकार

# अलका सरावगी

# प्राक्कथन

# प्राक्कथन

## ❋ प्रेरणा एवं विषय-चयन :

यह सच है कि हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा के प्रति शुरु से ही मेरी रूचि रही है। स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान मुझे हिंदी साहित्य के युग निर्माता प्रेमचंद के 'गोदान' तथा 'गबन', लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षा गुरू', भीष्म साहनी का 'तमस', अज्ञेय का 'अपने-अपने अजनबी', विनोदकुमार शुल्क का 'नौकर के कमीज', शानी का 'काला-जल', राजेंद्र यादव का 'शह और मात' जैसे वैविध्यपूर्ण विषयवस्तु के उपन्यासों को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। लेकिन इन उपन्यासों में मुझे पारंपरिक कला ही देखने को मिली जो सदियों पुरानी थी। आज भी कई साहित्यकार इसी पारंपरिक ढाँचे को अपनाकर साहित्य सृजन का दायित्व निभाते हैं।

एम्.फिल. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् सौभाग्य से शोध-निर्देशक के रूप में श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन जी चव्हाण (अध्यक्ष, हिंदी विभाग) का प्राप्त होना मेरे लिए महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। शोध चयन के संदर्भ में आपसे विचार-विमर्श करने पर आपने मुझे अपने बृहत् शोध परियोजना (समकालीन हिंदी तथा मराठी के बृहत् उपन्यासों का वैचारिक पक्ष: तुलनात्मक विमर्श) के अंतर्गत निहित सुप्रसिद्ध लेखिका अलका सरावगी का 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास पढ़ने का सुझाव दिया। प्रस्तुत उपन्यास में ढेर सारे विषय, शैली के नए-नए प्रयोग तथा भाषा के नए-नए प्रयोग के माध्यम से सामाजिक दायित्व का वहन करनेवाला यह उपन्यास पढ़कर मैं फिर गुरूवर से मिला। उन्होंने मुझे उनके बाकी दो उपन्यास पढ़ने की सलाह दी। इन दोनों उपन्यासों में भी कला के नए-नए प्रयोग देखकर मुझे लगा कि क्यों न मैं अलका सरावगी के उपन्यासों का कलात्मक मूल्यांकन कर सामाजिक एवं साहित्यिक दायित्व को वहन करूँ ? इसी इच्छा पूर्ति हेतु मैंने गुरूवर्य जी से इस विषय के बारे में विचार-विमर्श किया। उपन्यास कला के प्रति मेरी गहरी रूचि तथा जिज्ञासा देखकर तथा गहरे विचार-विमर्श के पश्चात् ''अलका सरावगी की उपन्यास कला का मूल्यांकन'' विषय का चयन हुआ। अनुसंधान के आरंभ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उभरे हुए थे -

1. अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं वाङ्मय किस प्रकार का रहा है ?
2. क्या अलका सरावगी पर व्यक्ति,विचारधारा,वातावरण तथा रचना का प्रभाव रहा है?
3. अलका सरावगी ने औपन्यासिक लेखन के लिए किन-किन विषयों को चुना है ?
4. अलका सरावगी के उपन्यास में चित्रित पात्र समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं ?
5. अलका सरावगी के उपन्यासों में देशकाल वातावरण की सृष्टि का निर्वाह किस प्रकार हुआ है?
6. अलका सरावगी के उपन्यासों का उद्देश्य क्या है ?
7. क्या कलात्मकता की कसौटी पर अलका सरावगी के उपन्यास उतर सकते हैं? कैसे?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के उपरांत उक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है -

**प्रथम अध्याय का शीर्षक है - ''अलका सरावगी व्यक्ति एवं वाङ्मय''।** प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत अलका सरावगी के व्यक्ति एवं वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय दिया है। इनमें उनकी जन्म-तिथि, जन्मस्थान, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह, संतान, मित्र-परिवार, पत्रकार, लेखन की प्रेरणा और सम्प्रति आदि बातों का विवेचन-विश्लेषण किया है। साथ ही व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए उनके वाङ्मय अर्थात् उनकी साहित्य-यात्रा के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए गए हैं।

**द्वितीय अध्याय का शीर्षक है - ''उपन्यास कला और अलका सरावगी के उपन्यास : स्वरूपगत विवेचन''।** इस अध्याय के अंतर्गत उपन्यास की परिभाषा, स्वरूप, तत्व तथा प्रकार आदि बातों का विवेचन कर विवेच्य उपन्यासों का उपर्युक्त मद्दों के आधार पर कलात्मक मूल्यांकन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

**तृतीय अध्याय का शीर्षक है - ''अलका सरावगी के उपन्यास : विषयवस्तु की कलात्मकता का मूल्यांकन''** प्रस्तुत अध्याय में अलका सरावगी के उपन्यासों की विषयवस्तु के अंतर्गत उपन्यास का आरंभ, विकास, संघर्ष, चरमसीमा और अंत आदि बातों का कलात्मक मूल्यांकन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

**चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - ''अलका सरावगी के उपन्यास : चरित्र-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन''**। इस अध्याय के अंतर्गत अलका सरावगी के उपन्यासों के प्रधान पात्रों की विशेषताएँ प्रस्तुत की है। साथ ही गौण पात्र, अन्य पात्र, पात्रों की संख्या, उनका चयन, तथा चरित्र-चित्रण आदि बातों का कलात्मक मूल्यांकन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

**पंचम अध्याय का शीर्षक है - ''अलका सरावगी के उपन्यास : देशकाल वातावरण सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन''**। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत अलका सरावगी के उपन्यासों के सामाजिक, ऐतिहासिक, महानगरीय, आर्थिक तथा राजनीतिक वातावरण का कलात्मकता की दृष्टि से मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

**पष्ठ अध्याय का शीर्षक है - ''अलका सरावगी के उपन्यास : भाषा शैली एवं उद्देश्य सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन''**। इसमें अलका सरावगी के उपन्यासों में प्राप्त संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी आदि शब्दों का, कहावतें, मुहावरे, लोकगीत, गालियों का प्रयोग, प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग तथा साहित्यिक काव्य पंक्तियों का प्रयोग आदि भाषा प्रयोगों का और पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी, स्वप्न, टेलीफोन, किस्सागोई तथा कुरियर आदि शैलियों के प्रयोगों का विवेचन-विश्लेषण किया है। साथ ही इन उपन्यासों के प्रधान तथा गौण उद्देश्यों का भी विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत मे प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में 'उपसंहार' में विवेच्य अध्यायों में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दर्ज किए हैं। साथ ही उपलब्धियाँ, अध्ययन की नई दिशाएँ, आधार ग्रंथ सूची एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची दी है।

## * इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध अलका सरावगी द्वारा लिखित औपन्यासिक कृतियों के कलात्मक मूल्यांकन पर केंद्रित है, जो पहली बार संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में अलका सरावगी के व्यक्तित्व एवं वाङ्मय का समग्र लेखा-जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में अलका सरावगी के उपन्यासों की विषयवस्तु, पात्र, देशकाल वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य आदि का सूक्ष्मता एवं गहराई से मूल्यांकन कर समग्र लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

## * ऋणनिर्देश :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में जिन विद्वानों तथा हितचिंतकों ने सहायता कि है उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के दिशानिर्देशन का ही फल है। मुझे आपसे हमेशा प्रेम, परामर्श, प्रेरणा तथा उचित निर्देशन मिलता रहा। आपकी बृहत् शोध परियोजना ''समकालीन हिंदी तथा मराठी के बृहत् उपन्यासों का वैचारिक पक्ष : तुलनात्मक विमर्श'' में कार्य करने का अवसर मिला। फलत: मेरे ज्ञान में वृद्धि हो गई साथ ही मेरे लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता भी बढ़ गई। काफी व्यस्तता के बावजूद भी आपने मेरे लिए समय-समय पर अमूल्य दिशा-निर्देशन दिया। आप जैसे गुरूवर्य को शब्दों के फुलों में बाँधना मेरे लिए असंभव है। फिर भी मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि आपकी अमिट छाया मुझ पर हमेशा बनी रहे ताकि मैं अपनी अनुसंधान की रूचि तथा जिज्ञासा की पूर्ति कर सकूँ।

मेरे लिए जिंदगी भर कष्ट उठानेवाले, कड़ी धूप में मेहनत करनेवाले और हमेशा मेरी भलाई सोचनेवाले परमपूज्य **माता-पिता** का मैं आजन्म ऋणी रहूँगा। मेरे माता-पिता के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभानेवाला और बुद्धिमान होते हुए भी आर्थिक विपन्नता के

कारण उच्च शिक्षा से वंचित मेरा छोटा भाई **श्री. दशरथ तुपे** के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही **मामा-मामी, चाचा-चाची, मौसा-मौसी, भाई-बहनों** तथा स्वर्गीय **श्री. भिमराव तुपे (चाचा)** आदि का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा है।

शिक्षा जीवन में मेरे आदर्श तथा आदरणीय **प्राचार्य डॉ. सुनीलकुमार लवटे, डॉ. रतनकुमार पांडेय, डॉ. बी.के. शर्मा (रोहिताश्व), डॉ. तुकाराम पाटील, डॉ. तेजस्वी कट्टीमणी, डॉ. झाडे, डॉ. यादवराव धुमाळ, डॉ. प्रकाश मोकाशी, डॉ. शोभा निंबाळकर, डॉ. सुलोचना आंतरेड्डी, डॉ. आशा मणियार, डॉ. भारती शेळके, डॉ.रमेश गवळी, डॉ.एकनाथ पाटील, डॉ.ओमप्रकाश कलमे, डॉ.शिवाजीराव नाळे, डॉ. संजय नवले, डॉ. राणु कदम, श्रीमती अपर्णा कुचेकर, डॉ. साताप्पा चव्हाण, प्रा. शहाजहान मणेर तथा डॉ. गोरखनाथ किर्दत** आदि का स्नेह एवं मार्गदर्शन मुझे मिलता रहा। अत: मैं इन सभी के प्रति सदैव ऋणी रहूँगा।

निरंतर संघर्ष का सामना करनेवाले आदर्श अध्यापक **डॉ. भाऊसाहेब नवले** का एम्.ए. से लेकर अब तक हमेशा मार्गदर्शन तथा सहयोग मिला है। अत: उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में मेरे आत्मीय मित्र **श्री. किरण देशमुख, श्री. अशोक मरळे, श्री. किरण चौगुले, श्री. डी.एस. भापकर, श्री. वालचंद नागरगोजे, श्री. प्रकाश मुंज, श्री. दत्तात्रय पतंगे, श्री. प्रविणकुमार चौगुले, श्री. प्रकाश कोपार्डे, श्री. संदिप तरटे, श्री. मनोज शिंदे, श्री. सुरेश भोरे, श्री. बाळासाहेब कदम, श्री. तानाजी हवलदार, अजित लिपारे** के साथ-साथ **रूपाली चव्हाण, वैशाली कुंभार, वैशाली जाधव, वृषाली, छाया माळी, शैलजा गवळी, रीना पाटील, सुषमा नामे, संगीता गवळी, शैलजा कांबळे** आदि सहेलियों का भी सहयोग प्राप्त हुआ है। अत: इन सभी हितचिंतकों के प्रति मैं धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय के **बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय,** अकलूज के **शंकरराव मोहिते पाटील ग्रंथालय,** तथा **जयकर ग्रंथालय, पुणे** आदि का योगदान रहा है। अत: इन ग्रंथालयों के **ग्रंथपाल** तथा

**सभी कर्मचारियों** का और हिंदी विभाग के सहायक अधीक्षक **डॉ. मंगेश कोळेकर** तथा **चांदणे (मामा)** का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है। अत: मैं इन सबका ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकण करनेवाले **अक्षर टायपिंग** के संचालक **गिरिधर सावंत** और **श्रीमती पल्लवी सावंत** का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

Tupede.

( श्री. दीपक रामा तुपे )

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 13/02/2007

* * * *